JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नारी का साहित्यिक प्रभाव: शास्त्रीय से आधुनिक तक

मिंटु पान्डा

शोधार्थी, संस्कृत विभाग

एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म.प्र.)

अनुसंधान निर्देशक (गाइड) :

डॉ. सरिता जैन दोशी

सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग

एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म.प्र.)

सारांश

'शास्त्रीय' शब्द सुनते ही मानव मन में उच्चता, मर्यादा और उत्कृष्टता की छवि उभरती है। भारतीय शास्त्रीय साहित्य—वेद, उपनिषद्, महाकाव्य, पुराण, काव्य, नाटक और स्मृति—सामाजिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक चेतना का सर्वोच्च रूप माना जाता है। इस साहित्य में स्त्री को कभी देवी के रूप में, कभी त्याग और पवित्रता की मूर्ति के रूप में, तो कभी एक मानवीय संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया गया है।

सीता, द्रौपदी, सावित्री, गार्गी, मैत्रेयी जैसी स्त्रियाँ त्याग, ज्ञान, निष्ठा और विद्रोह—सभी का सम्मिलित स्वरूप धारण करती हैं। शास्त्रीय साहित्य में स्त्री की भूमिका सामाजिक मूल्यों और धर्मनिष्ठ आदर्शों से जुड़ी थी, जिसके प्रभाव आधुनिक साहित्य तक गहराई से पहुँचे।

उन्नीसवीं–बीसवीं शताब्दी में आधुनिक साहित्य के उदय के साथ ही स्त्री के पारंपरिक स्वरूप पर प्रश्न उठने लगे। अब वह केवल गृहकेंद्रित या आज्ञाकारी नहीं रही, बल्कि अपनी स्वतंत्र पहचान, स्वप्न और चेतना को व्यक्त करने लगी। टैगोर की चारुलता और बिमला, शरतचन्द्र की ललिता और कुमुद, तथा आधुनिक नारीवादी लेखिकाएँ—बेगम रुकैया, महाश्वेता देवी, आशापूर्णा देवी—स्त्री की नई छवि गढ़ती हैं, जो आत्मसम्मान, संघर्ष और विचार-स्वातंत्र्य को प्रधानता देती है।

शास्त्रीय साहित्य से प्राप्त त्याग, पवित्रता और मर्यादा के आदर्श आधुनिक साहित्य में पुनर्परिभाषित होते हैं। आधुनिक लेखन इन आदर्शों को चुनौती देता है तथा स्त्री को प्रतीक नहीं, बल्कि विचारशील, संवेदनशील और स्वतंत्र मनुष्य के रूप में देखने का आग्रह करता है। इस प्रकार शास्त्रीय से आधुनिक साहित्य की स्त्री-यात्रा भारतीय सांस्कृतिक चेतना के विकास की गाथा है।

मुख्य शब्द

प्राचीन भारत, स्त्री-चेतना, ज्ञान, त्याग, आधुनिक साहित्य, पहचान, मूल्य, पवित्रता।

भूमिका

भारतीय शास्त्रीय साहित्य भारतीय संस्कृति, दर्शन, कला और समाज का दर्पण है। वेदों से लेकर महाकाव्यों, पुराणों, संस्कृत नाटकों, काव्य, आचारशास्त्र, स्मृति और दार्शनिक ग्रंथों तक—भारत की साहित्यिक परंपरा में स्त्री की उपस्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

वेदकाल में स्त्रियाँ केवल गृहिणी नहीं थीं, बल्कि अध्यात्म, मंत्र-रचना, संवाद और उपनिषद्-चर्चाओं की प्रमुख सहभागी थीं। गार्गी, मैत्रेयी, घोषा, लोपामुद्रा जैसी स्त्रियाँ भारतीय ज्ञानाध्यक्षता के इतिहास में स्थायी स्थान रखती हैं।

समय के साथ स्त्री की भूमिका में परिवर्तन आया—रामायण की सीता धैर्य और शुचिता का प्रतीक बनीं, महाभारत की द्रौपदी प्रतिशोध और न्याय की तीव्र चेतना का स्वर बनीं; कालिदास की शकुंतला कोमलता, प्रकृति और माधुर्य की प्रतिमूर्ति हुई।

आधुनिक साहित्य तक पहुँचते-पहुँचते स्त्री की यह यात्रा प्रतीक से व्यक्ति, मौन से प्रतिरोध और कर्तव्य से आत्मचेतना की ओर रूपांतरित होती गई।

1. भारतीय शास्त्रीय साहित्य में स्त्री-प्रतिनिधित्व

1.1 वैदिक एवं उपनिषद साहित्य में नारी चरित्र: गरिमा एवं दार्शनिक स्थिति

प्राचीन भारतीय साहित्य—विशेषकर वैदिक एवं उपनिषद—ने नारी की सामाजिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक स्थिति को एक विशिष्ट गरिमा प्रदान की। इस युग में नारी की पहचान गृहस्थी से आगे बढ़कर ज्ञान, तप और आलोचनात्मक चिंतन के क्षेत्र तक विस्तृत हुई। फलस्वरूप, वैदिक एवं उपनिषद साहित्य में नारी चरित्र न केवल परिवार या धार्मिक साधना में सहायक है, बल्कि एक स्वतंत्र सत्ता के रूप में भी प्रकट होती है।

ऋग्वेद में अनेक ऋषियों या मंत्र-साधक नारियों का उल्लेख है, जिन्होंने अपनी साधना, ज्ञान और आध्यात्मिक अन्वेषण के माध्यम से मंत्रों की रचना की। लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, रात्रि, सास्वती, विश्ववा आदि नारियों ने वैदिक ज्ञान की धारा को समृद्ध किया। लोपामुद्रा द्वारा रचित मंत्र नारियों की मानसिक शक्ति और स्वतंत्र चिंतन को दर्शाते हैं। अपाला को वैदिक साहित्य में साधना और व्यक्तिगत शक्ति के प्रतीक के रूप में जाना जाता है। घोषा ने अपनी लंबी बीमारी के बावजूद मंत्रों की रचना करके आत्म-शक्ति और भक्ति का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। ये नाम इस बात का संकेत देते हैं कि वैदिक समाज में महिलाओं की शिक्षा और तपस्या, दोनों को मान्यता और सम्मान प्राप्त था।

वैदिक समाज में 'अर्धांगिनी' और 'सहधर्मिणी' की अवधारणा ने महिलाओं की स्थिति को सुदृढ़ किया। पति-पत्नी को धर्म, यज्ञ और घरेलू जिम्मेदारियों में समान भागीदार माना जाता था। सभाओं और बैठकों में भी महिलाओं की उपस्थिति का उल्लेख मिलता है, जो उनकी सामाजिक भागीदारी का प्रमाण है।

उपनिषदों में महिलाओं की बौद्धिक और दार्शनिक शक्ति अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। बृहदारण्यक उपनिषद की गार्गी बच्चनवी महिला शिक्षा के प्रचलन का एक ज्वलंत उदाहरण हैं। जनक के दरबार में याज्ञवल्क्य के साथ उनकी दार्शनिक बहस ब्रह्म, आकाश और सत्ता की मूलभूत अवधारणाओं पर प्रश्न उठाती है। इस चर्चा की गहराई यह सिद्ध करती है कि महिलाओं द्वारा अर्जित ज्ञान का समाज में एक विशेष स्थान था।

उपनिषद साहित्य में मैत्रेयी एक अन्य महत्वपूर्ण महिला पात्र हैं। याज्ञवल्क्य के साथ उनके संवाद में आत्म-ज्ञान के महत्व और धन की अनित्यता की जो चर्चा उभरती है, वह भारतीय आत्मनिरीक्षण के प्रमुख आधारों में से एक है। उनका प्रसिद्ध कथन—"मैं धन से अमर नहीं होना चाहती"—नारियों की तार्किकता, मुक्तिबोध और दार्शनिक दृष्टिकोण का द्योतक है।

सर्वोच्च बात यह है कि वैदिक और उपनिषदिक साहित्य में नारी पात्र कोई गौण नहीं है; बल्कि वह ज्ञान, तर्क, तप और नैतिकता की समान रूप से वाहक है। लोपामुद्रा, अपाला, घोषा, गार्गी और मैत्रेयी जैसे पात्र सिद्ध करते हैं कि प्राचीन भारतीय चिंतन नारी को स्वतंत्र, विचारशील और सामाजिक निर्माण में एक सक्रिय शक्ति के रूप में मान्यता देता था।

1.2 महाकाव्यों में स्त्री—रामायण और महाभारत

रामायण और महाभारत में स्त्री-चरित्रों का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। रामायण में सीता त्याग, धैर्य, मर्यादा और पवित्रता की प्रतीक बनकर सम्मुख आती हैं। उनका वनवास और परीक्षा भारतीय नारी के अदम्य साहस तथा करुणा को प्रकट करता है। उर्मिला का मौन तप भी नारी-बल और कर्तव्यनिष्ठा का अद्भुत उदाहरण है। महाभारत में द्रौपदी न्याय, सम्मान और सत्य के लिए संघर्षरत एक दृढ़ चरित्र के रूप में उभरती हैं। कुन्ती की बुद्धिमत्ता, गांधारी की कठोर तपस्या और सुभद्रा की सरलता मिलकर नारी-स्वरूप की विविधता को दर्शाती हैं। इन दोनों महाकाव्यों में स्त्रियाँ केवल परिवार का आधार नहीं, बल्कि समाज के आध्यात्मिक और नैतिक निर्माण की मुख्य शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

1.3 संस्कृत नाटक और काव्य में स्त्री

संस्कृत नाटक और काव्य परम्परा में नारी-चरित्रों का स्थान अत्यन्त गौरवपूर्ण और अर्थपूर्ण है। इन ग्रन्थों में स्त्रियाँ केवल सौन्दर्य की प्रतिमा नहीं, बल्कि ज्ञान, करुणा, धैर्य, निष्ठा और सामर्थ्य का जीवन्त रूप मानी गई हैं। कालिदास के काव्य में शाकुन्तला सरलता, कोमलता और प्रकृति-सौहार्द का प्रतीक बनकर उभरती हैं, वहीं उनकी तपस्या और दृढ़ प्रेम नारी-मन की पवित्रता को दर्शाता है। कुमारसम्भव में पार्वती तप, विश्वास और अध्यात्म की चरम भूमिका निभाती हैं, जो मानव-जीवन में नारी के संकल्पबल को उजागर करती है। भास और अन्य नाटककारों के नाटकों में नारी-चरित्रों की विविध छवियाँ मिलती हैं—कहीं वे मातृत्व की कोमलता लेकर आती हैं, कहीं परामर्श और प्रबुद्ध विचार से समाज-धर्म को दिशा देती हैं। संस्कृत साहित्य नारी को केवल गृह-व्यवस्था की धुरी नहीं मानता, बल्कि नीति, धर्म और संस्कृति की संरक्षिका के रूप में उच्च स्थान प्रदान करता है। इन रचनाओं के माध्यम से नारी-चरित्र भारतीय आदर्शों, सौन्दर्य-चिन्तन और नैतिक मूल्य-व्यवस्था को समृद्ध बनाते हुए साहित्य को विशिष्ट ऊँचाई प्रदान करते हैं।

2. आधुनिक साहित्य पर शास्त्रीय स्त्री-आदर्शों का प्रभाव

2.1 औपनिवेशिक काल और आधुनिक नारी का उदय

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय साहित्य में एक पुनर्जागरण आया। नए सामाजिक सुधारों, राष्ट्रवाद और पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव के बीच क्लासिक आदर्शों की पुनर्व्याख्या हुई।

शास्त्रीय साहित्य के महिला पात्रों का आधुनिक बंगाली साहित्य पर गहरा और स्थायी प्रभाव रहा है। वैदिक, उपनिषद, पुराण और महाकाव्यों की सशक्त महिला पात्र—जैसे सीता, द्रौपदी, सावित्री, गार्गी या मैत्रेयी—आधुनिक लेखकों के लिए नैतिक शक्ति, आत्म-संयम, आत्म-सम्मान और आत्म-बलिदान की प्रतीक बनकर उभरी हैं।

बंकिमचंद्र चटर्जी ने अपने उपन्यासों में शास्त्रीय महिलाओं के इसी साहस और आदर्श को एक नया रूप दिया है। आनंदमठ की शांता, विश्ववृक्ष की कुंदमणि, या दुर्गेशनंदिनी की तिलोत्तमा—सभी पात्र शास्त्रीय महिलाओं की दृढ़ता, आदर्शवादिता और चरित्र की दृढ़ता को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। वे आत्म-सम्मान और कर्तव्य-बोध से संपन्न हैं, जो शास्त्रीय पात्रों के नैतिक आदर्शों की विरासत को आगे बढ़ाता है।

रवींद्रनाथ टैगोर ने भी शास्त्रीय परंपरा से महिलाओं की आध्यात्मिक स्वतंत्रता के विचार को अपनाया। लावण्या, बिमला, कुमुदिनी, मृणाल—ये पात्र शास्त्रीय नारियों के धैर्य, बुद्धिमत्ता और गहन मानवता का आधुनिक प्रतिनिधित्व करते हैं। रवींद्रनाथ टैगोर ने उन्हें घरेलू भूमिकाओं तक सीमित नहीं रखा; बल्कि, उन्होंने उन्हें स्वतंत्र विचारों, सपनों और स्वतंत्रता की स्वामिनी के रूप में प्रस्तुत किया।

परिणामस्वरूप, आधुनिक बंगाली साहित्य ने शास्त्रीय नारियों के गुणों, शक्ति और गरिमा को नई सामाजिक वास्तविकताओं के साथ जोड़कर एक समृद्ध मानवीय परिप्रेक्ष्य का निर्माण किया है।

2.2 नारीवादी स्वरों का उदय

प्राचीन भारतीय साहित्य में स्त्री की गरिमामय उपस्थिति, उसकी पीड़ा, आत्मसम्मान, संघर्ष और स्वतंत्र चिंतन की परंपरा आधुनिक नारीवादी साहित्य को गहरा वैचारिक आधार प्रदान करती है। उपनिषदों की गर्गी–मैत्रेयी, रामायण की सीता, महाभारत की द्रौपदी और संस्कृत काव्य की शकुंतला जैसी स्त्रियाँ आधुनिक नारी–चेतना की प्रारम्भिक प्रेरणाएँ बनी रहती हैं। इन्हीं चरित्रों की नैतिक दृढ़ता, आत्मगौरव, अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध और आत्मपहचान की खोज आधुनिक नारीवादी लेखन में नए संदर्भ और सामाजिक यथार्थ के साथ पुनर्जीवित होती है। आधुनिक नारीवादी साहित्य में महादेवी वर्मा की "श्रृंखला की कड़ियाँ", अमृता प्रीतम की "पिंजर", कृष्णा सोबती की "मित्रो मरजानी", मन्नू भण्डारी की "अपने–अपने कोने", तथा प्रभा खेतान की "आधे–अधूरे सच" जैसी कृतियाँ स्त्री–मन, दमन, विद्रोह और आत्ममुक्ति की यात्रा को अत्यंत संवेदनशीलता और प्रखरता के साथ प्रस्तुत करती हैं। इन लेखिकाओं ने स्त्री को केवल सहनशील पात्र नहीं, बल्कि अपनी तकदीर स्वयं लिखने वाली सशक्त सत्ता के रूप में चित्रित किया है। आज का नारीवादी साहित्य स्त्री की देह–राजनीति, सामाजिक असमानता, पारिवारिक बन्धन, आर्थिक स्वतंत्रता और मानसिक मुक्ति को नए दृष्टिकोण से विश्लेषित कर प्राचीन परंपरा और आधुनिक संघर्ष–चेतना के बीच एक सशक्त सेतु निर्मित करता है, जिससे स्त्री–स्वर और अधिक मुखर, व्यापक और परिवर्तनकारी रूप प्राप्त करता है।

3. मिथक से रूपक तक—स्त्री-प्रतिमान का रूपांतरण

आधुनिक साहित्य शास्त्रीय नारी-चित्रों को मिथकात्मक रूप से पुनः-अवतरित कर उन्हें प्रत्यक्ष कथानक से परे गहन प्रतीकात्मकता प्रदान करता है। द्रौपदी अब बलात्कार और उत्पीड़न के अनुभवियों के संघर्ष तथा प्रतिरोध की सार्वभौमिक प्रतिक बनकर उभरती है; उसकी तकरार और न्याय की माँग सामूहिक आक्रोश और देह-राजनीति पर प्रश्न उठाने का माध्यम बन जाती है। सीता को वैवाहिक दमन, मातृत्व की जटिलताओं और सामाजिक मानदण्डों के अंतर्विरोधों का विवेचन करने के लिए नए सन्दर्भों में संवर्धित किया जाता है, जिससे गृहस्थ जीवन के भीतर नारी की आजीविका और स्वायत्तता पर पुनर्विचार होता है। शकुंतला का रूप पारिस्थितिक संतुलन, नारीन्स्पंदन और स्मृति की शक्ति का प्रतीक बनकर प्रकृति एवं सांस्कृतिक स्मरण के बीच एक सेतु रचता है। ये रूपान्तरण दर्शाते हैं कि शास्त्रीय नायिकाएँ केवल जीवित नहीं रहीं, बल्कि साहित्यिक लेखन में विचारशील आलोचना और सामाजिक चेतना निर्मित करने के सशक्त साधन बन कर विकसित हुई हैं।

4. सामाजिक-साहित्यिक महत्त्व

प्राचीन नारी–पात्रों की आधुनिक साहित्य में उपस्थिति केवल सांस्कृतिक निरन्तरता का संकेत भर नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना के विकास का भी प्रमाण है। इन पात्रों के पुनर्पाठ से स्पष्ट होता है कि परम्परा किस प्रकार समय के साथ रूपान्तरित होकर नई पहचान का निर्माण करती है। आधुनिक साहित्यकार प्राचीन स्त्री–भूमिकाओं को नए दृष्टिकोण से व्याख्यायित करते हुए पितृसत्तात्मक ढाँचों को चुनौती देते हैं; जहाँ पूर्वकाल में विनम्र या गौण समझी गई स्त्रियाँ आज प्रतिरोध, आत्मसम्मान और न्याय–चेतना की ध्वजवाहिनी बनकर उभरती हैं। रूपक, प्रतीक और गहन संकेतों के माध्यम से नारी–चरित्र को संघर्ष और परिवर्तन का साधन बनाया जाता है, जिससे वह केवल कथा का अंग नहीं, बल्कि वैचारिक प्रतिरोध की सशक्त धुरी बन जाती है।

जब आधुनिक साहित्य इन चरित्रों के मूल स्रोत—धार्मिक, दार्शनिक या मान्य ग्रंथों—को स्वीकार कर उन्हें पुनर्लेखित करता है, तब वह उन्हें ऐतिहासिक वैधता, सांस्कृतिक गरिमा और रचनात्मक स्वतंत्रता प्रदान करता है। परिणामस्वरूप नारी–स्वर अधिक मुखर, प्रामाणिक और परिवर्तनशील बनकर उभरता है। इस पुनर्सृजन प्रक्रिया से साहित्य में नारी का स्थान केवल सहानुभूति का विषय न रहकर बौद्धिक विमर्श, सामाजिक जागृति और वैचारिक उन्नति का आधार बन जाता है। इस प्रकार प्राचीन और आधुनिक के संगम से नारी–चेतना नई ऊर्जा, नए अर्थ और व्यापक सामाजिक दृष्टि प्राप्त करती है।

5. प्रकृति और नैतिकता के प्रतीक रूप में स्त्री

भारतीय साहित्य में स्त्री–चरित्र को प्रायः प्रकृति की सहज मधुरता, जीवनदायिनी शक्ति और नैतिक आदर्शों की मूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। प्रकृति की भाँति स्त्री भी सृजन, संरक्षण और पुनर्नवीकरण की धुरी मानी जाती है। वह अपने अंतर्मन की करुणा, धैर्य, सहनशीलता और संतुलित दृष्टि से परिवेश को पोषित करती है, ठीक उसी प्रकार जैसे प्रकृति अपनी विविधता से संसार को धारण करती है। प्राचीन ग्रंथों में सीता की पवित्रता, द्रौपदी की न्याय–चेतना, शकुंतला की सौम्यता और दमयंती की धैर्यपूर्ण निष्ठा के माध्यम से स्त्री को एक उच्च नैतिक सत्ता के रूप में चित्रित किया गया है, जो परिस्थितियों के संघर्ष के बीच भी सत्य और धर्म के मार्ग से विचलित नहीं होती। स्त्री–चरित्र का यह नैतिक तेज साहित्य को न केवल मूल्य–केन्द्रित बनाता है, बल्कि मानव–जीवन में नैतिकता, आचरण और आत्मसम्मान की अनिवार्यता को भी स्थापित करता है।

आधुनिक साहित्य में भी यह प्रतीकात्मक परम्परा नए संदर्भों में पुनर्जीवित होती है, जहाँ स्त्री प्रकृति की करुणा और नैतिक शक्ति के साथ-साथ अपने अस्तित्व, अधिकार और निर्णय की स्वतंत्रता की प्रतीक भी बनती है। वह अब केवल पारिवारिक या सामाजिक भूमिकाओं में सीमित न रहकर मानवता के नैतिक विवेक की संरक्षिका के रूप में उभरती है। इस प्रकार स्त्री–चरित्र साहित्य में प्रकृति की लयात्मकता, नैतिकता की दिव्यता और मानवीय संवेदना की गहराई को एक सूत्र में पिरोकर संस्कृति और साहित्य—दोनों के लिए एक स्थायी प्रेरणा–स्तम्भ बन जाता है।

6. शास्त्रीय बनाम आधुनिक साहित्य में स्त्री—मुख्य भेद

शास्त्रीय साहित्य और आधुनिक साहित्य में नारी-चित्रण का अंतर उसकी सामाजिक स्थिति, चेतना और अभिव्यक्ति के बदलते स्वरूप को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। शास्त्रीय साहित्य में स्त्री को प्रायः मर्यादा, करुणा, त्याग और आदर्श नैतिकता की प्रतिमूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सीता, शकुंतला और द्रौपदी जैसी पात्राएँ ऊँचे आदर्शों पर स्थित अवश्य हैं, परन्तु उनकी व्यक्तिगत इच्छाएँ, स्वाधीन निर्णय या सामाजिक प्रतिरोध सीमित रूप में ही व्यक्त हो पाए। वहाँ स्त्री की छवि मुख्यतः परिवार और संस्कृति की ध्वजवाहिका तथा कर्तव्यनिष्ठ नायिका के रूप में ही उभरती है।

इसके विपरीत आधुनिक साहित्य नारी को एक स्वाधीन, जागरूक और संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में चित्रित करता है। यहाँ स्त्री केवल आदर्शों की प्रतीक नहीं, बल्कि अपने अधिकार, पहचान और अस्मिता के लिए लड़ने वाली सशक्त मानवीय सत्ता है। महाश्वेता देवी, इस्मत चुगताई और कमला दास जैसी रचनाकारों ने स्त्री के मानसिक द्वंद्व, दमन, लैंगिक विषमता और विद्रोह के स्वर को गहरी संवेदनशीलता से उकेरा है। इस प्रकार आधुनिक साहित्य में नारी-स्वर अधिक प्रखर, यथार्थपरक और परिवर्तनकारी रूप में विकसित हुआ है।

निष्कर्ष

प्राचीन शास्त्रीय साहित्य में, महिलाओं को सामान्यतः आदर्श, सतीत्व, धैर्य, त्याग और करुणा के रूप में चित्रित किया गया है। चाहे वह रामायण में सीता हों, महाभारत में द्रौपदी, अर्जक उपन्यास में गार्गी या कालिदास में शकुंतला, महिलाओं को नैतिकता की संस्थापक और पारिवारिक मूल्यों की रक्षक के रूप में देखा गया है। उनकी भूमिका कभी सहिष्णुता के प्रतीक के रूप में, कभी मातृत्व की महिमा के रूप में, तो कभी नैतिक आदर्शों के शिखर के रूप में स्थापित की गई है। हालाँकि, इनमें से कई साहित्यिक छवियों में, महिलाओं के वास्तविक सामाजिक अनुभव, संघर्ष और स्वतंत्र अस्तित्व की अभिव्यक्ति अपेक्षाकृत सीमित थी।

आधुनिक साहित्य ने महिलाओं की इस पारंपरिक छवि का पुनर्मूल्यांकन किया है। आधुनिक लेखकों ने दर्शाया है कि महिलाएँ केवल आदर्शों की वाहक ही नहीं हैं; वे व्यक्ति, विचारक, विरोध की आवाज़ और सामाजिक परिवर्तन की उत्प्रेरक भी हैं। आधुनिक साहित्य सीता को वैवाहिक उत्पीड़न और लैंगिक असमानता के विरुद्ध प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में, द्रौपदी को अन्याय के विरुद्ध सामूहिक स्त्री स्वर की प्रतिनिधि के रूप में, और शकुंतला को प्रकृति के साथ स्त्री चेतना के जैविक बंधन के प्रतीक के रूप में पुनर्व्याख्यायित करता है। परिणामस्वरूप, स्त्री का चरित्र अब केवल पवित्रता के आदर्श तक सीमित नहीं रह गया है; बल्कि वह प्रतिरोध, आत्म-सम्मान, विशिष्टता की भावना और मानवीय न्याय की एक सशक्त प्रतिमूर्ति बन गई है।

अतः, यह कहा जा सकता है कि प्राचीन शास्त्रीय साहित्य में नारी की आदर्श छवि आधुनिक साहित्य में एक नए प्रकाश में प्रकट हुई है। अतीत की प्रतीकात्मक स्त्रियाँ आज के साहित्यिक व्यवहार में सामाजिक समझ, लैंगिक समानता, प्रतिरोध और मानवीय नैतिकता की एकीकृत प्रतिनिधि के रूप में परिवर्तित हो गई हैं, जिससे सामाजिक चिंतन के लिए एक महत्वपूर्ण आधार तैयार हुआ है।

संदर्भ (References)

1. Kapila Vatsyayan – Traditions of Indian Classical Literature

2. Sukumari Bhattacharji – Women and Society in Ancient India

3. Arvind Sharma – Women in Indian Religions(ed.)

4. Jasbir Jain – Gendered Realities, Human Spaces

5. Meenakshi Mukherjee – The Perishable Empire

6. K. Krishnamoorthy – Abhijnanasakuntalam of Kalidasa(ed.)

7. Devdutt Pattanaik – Sita: An Illustrated Retelling of the Ramayana

8. Srilata Raman – Self-Surrender in Sanskrit Epic and Puranic Literature

9. Mira K. Desai – Women in Modern Indian Literature

10. Romila Thapar – Sakuntala: Texts, Readings, Histories